वार्तालाप-542, रिसरा (हुगली), दिनांक 25.03.08

Disc.CD No.542, dated 25.03.08 at Risra (Hooghly)

समयः 21.57-30.10

जिज्ञासुः हमको मुक्ति चाहिए। मुक्ति नहीं मिलता है हमको।

बाबाः मुक्ति का मतलब क्या है?

जिज्ञासु- मुक्ति हमारी..... (बातचीत).....इससे थोड़ा मुक्ति चाहिए। हमको कुछ नहीं चाहिए।

बाबा- शरीर छूट जाती है तो मुक्ति हो जायेगी?.....

जिज्ञासु- मुक्ति मतलब कम से कम....

बाबा- मुक्ति मतलब ये जो फैलावा फैला हुआ है, धंधा-धोरी फैला हुआ है इससे हमको मुक्ति मिल जाए। लेकिन जब शरीर छूट जायेगा तो मुक्ति हो जायेगी क्या?

जिज्ञासु- वो तो उनका बात है।

बाबा- नहीं-2 वो भी इन्क्लू□ है।

जिज्ञासु- हाँ, इन्क्लू□ है लेकिन हमको इतना सोचना है कि हम किसी का चीज के बस में नहीं होना चाहिए।

Time: 21.57-30/10
Student: I want *mukti* (liberation). I have not been able to attain *mukti*.
Baba: What is meant by *mukti*?
Student: My *mukti* (There is a conversation in between)..... I want *mukti* from this. I do not want anything [else].
Baba: When someone leaves the body, does he attain *mukti*?...
Student: *Mukti* means at least...
Baba: *Mukti* means, we should become free from this expanse, the expanse of business and occupation. But will you attain *mukti* when you leave the body?
Student: That is their (people of the path of *bhakti*) issue.
Baba: No, no. That is also included.
Student: Yes, that is included but I should think that I should not be a slave to anything.

बाबा- ये इसलिए ऐसा बोल रहे हैं कि आप ये नहीं समझ रहे हैं कि हम हैं क्या? आप जो हैं वो ये शरीर नहीं हैं। ये पाँच तत्वों का पुतला तो आज है कल नहीं रहेगा। लेकिन आप एक आत्मा हैं। इसकी रोशनी आँखों से निकल रही है। इन आँखों से निकलती हुई रोशनी ही बता रही है कि आप कोई और चीज हैं। वो रोशनी जब निकल जाती है तो ये सब रहेगा लेकिन आप नहीं रहेंगे।

जिज्ञासु- ये तो पंचभूत में मिल जायेंगे।

बाबा- ये पाँच भूत में मिल जायेगा लेकिन आपकी मुक्ति नहीं होगी।

जिज्ञासु- वो बहुत दूर का बात है।

बाबा- बहुत दूर कहाँ? आप वृद्ध हो रहे हैं।

जिज्ञासु- मुक्ति नहीं मिलेगी। जब तक उनका छुटकारा नहीं मिलेंगे तब तक हमको मुक्ति कैसे मिलेगी?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Baba: You are saying like this because you are not able to understand: what are we? You are not this body. This effigy of five elements is present today, it will not remain tomorrow. But you are a soul whose light is radiating from the eyes. The very light radiating from your eyes is saying that you are something else. When that light goes out, then all this (body) will remain, but you will not exist.
Student: This (body) will mix in the five elements.
Baba: It will mix in the five elements, but you will not attain *mukti*.
Student: That is a far-off subject.
Baba: How is it a far-off subject? You are growing old.
Student: I will not attain *mukti*. Unless I become free from them, how will I attain *mukti*?

बाबा- तो ऐसे ही सबसे पहली बात समझने की है कि हम तो आत्मा हैं। ये घड़ी-2 दूसरे को बात करते समय, किसी से मिलते-जुलते समय ये पक्का याद रखने की चीज है कि हम यहाँ टीका भले न लगाएं लेकिन आत्मिक स्थिति में टिकें कि हम वो स्टार आत्मा हैं जो आत्मा यहाँ टिकी हुई है और हम आत्मा इस आत्मा से बात कर रहे हैं। जब हम किसी से बात करते हैं तो पेट के तरफ थोड़े ही देखकर बात करते हैं। बात करते हैं तो कहाँ नजर जाती है? दोंनो आँखों के बीच में। इसका मतलब आत्मा वहाँ विराजमान है। उस आत्मा से हम आत्मा बात करते हैं। हमारा कोई कनेक्शन इनके साथ है पूर्वजन्मों का तो ये हमारे सामने बैठे हैं, हमको देख रहे हैं, हमसे बात कर रहे हैं। सभी आत्माओं के साथ हिसाब-किताब है। किसी के साथ दुख का हिसाब-किताब आ जाता है। सभी सुख चाहते हैं, दुख कोई नहीं चाहता।
Baba: So, in this way, the first thing to understand is, I am certainly a soul. While talking to others, while meeting someone we should remember this again and again and firmly that even if we do not apply *teeka* (vermilion mark on the forehead) here, we should become constant in soul conscious stage: I am a star like soul which resides here and I a soul am talking to this soul. When we talk to someone, we don't talk seeing the stomach. When we talk where do we see? We see in between both the eyes. It means that the soul resides there. We souls, talk to that soul. We have a *connection* of previous births with him that is why he is sitting in front of us; he is looking at us and talking to us. There is a karmic account with all the souls. With some the karmic account of sorrow emerges. Everyone wants happiness. Nobody wants sorrow.

जिज्ञासु- नहीं दुख तो रहेगा। दुख नहीं होगा तो सुख का मालूम नहीं पड़ेगा ना।
बाबा- सुख तो चाहते हैं सब। ये कोई नहीं चाहता कि हमको सुख न मिले। सुख मिले लेकिन दुख न मिले। तो दुख से छुटकारा हो जाना, अशांति से छुटकारा हो जाना वही हमको चाहिए और ये चाहने के लिए आत्मज्ञान जरूरी है।
जिज्ञासु- मुक्त तो होता नहीं।
बाबा- होयगा-2। आत्मा का ज्ञान परमात्मा के सिवाए कौन दे सकता है?
जिज्ञासु- उनका दया होने से तो मिलेगा।
बाबा- क्या पता आपके ऊपर दया हो रही हो, आप टाइम निकालें। और संगी-साथी तीन-2 इकट्ठे हो गये। एक ही ऐसे। वो भी उसी लाईन में।
जिज्ञासु- हमको मुक्ति चाहिए और कुछ नहीं चाहिए। ये जो संसार है माया।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

बाबा- मुक्ति से भी और एक ऊँची चीज है जीवनमुक्ति। जीवन रहे-2 जीवन में रहते-2 हमको सुख मिले। दुख न मिले।

जिज्ञासु- नहीं दुख का भी कोई परवाह नहीं है।

Student: The sorrow will be present anyway. If there is no sorrow, you will not know about [the value of] happiness, will you?

Baba: Everyone wants happiness. Nobody wishes, I shouldn't get happiness. [Everyone wishes:] I should get happiness, I should not get sorrow. So, to be free from sorrow and restlessness, this is what I want. And in order to wish for that the knowledge of the soul is necessary.

Student: We are not liberated.

Baba: He will, he will. Who other than the Supreme Soul can give the knowledge of the soul?

Student: We will certainly attain it [*mukti*] when He shows mercy.

Baba: Who knows that mercy is being showered upon you! Give some time… moreover, three of you friends have gathered. Only one of them is…They are also in the same line.

Student: I want *mukti* and nothing else. This world is an illusion.

Baba: There is something greater than even *mukti*, it is *jeevanmukti* (liberation in life). We should remain alive, while being alive we should receive happiness. We should not get sorrow.

Student: No. I don't care about sorrow either.

बाबा- एटमबॉम्ब बने हुए पड़े हैं, हिंदुस्तान की ये हालत है। हिंदुस्तान दुनिया का सबसे पुराना देश है। जो चीज जितनी ज्यादा पुरानी होती है उतनी ज्यादा दुखदाई हो जाती है। ये इंडिया में जितना ज्यादा दुख है उतना ज्यादा और कोई देश में नहीं है। तो ये जो दुख है, दुख का मूल कारण ये है कि पापाचार बहुत बढ़ चुका है। और ज्यादा बढ़ रहा है। इतना बढ़ेगा, इतना बढ़ेगा, देखो इंडिया में इतने धर्म फैले हुए हैं, इतने धर्म और किसी भी देश में नहीं फैले हुए हैं और धर्मों के आधार पर जो विद्वेष फैला हुआ है, आपसी मनमुटाव, उतना और किसी भी देश में नहीं फैला हुआ है। जितनी जातियाँ भारतवर्ष में फैली हुई हैं। इतनी जातियाँ और किसी भी देश में नहीं फैली हुई हैं। और जातियों का आधार लेकर के मुनमुटाव, लड़ाई-झगड़ा किसी भी देश में नहीं है। भारतवर्ष के अंदर जितनी भाषायें फैली हुई हैं, बंगाली, पंजाबी। अभी यहाँ देखो पंजाबी कोई दिखाई पड़ता है बंगाल में? बंगाल में पंजाबी कोई नहीं दिखाई पड़ेगा। बहुत कम। पंजाब में बंगाली नहीं दिखाई पड़ता है।..... यहाँ इंडिया में जितना स्टेटिज्म है, इतना और किसी भी देश में स्टेटिज्म नहीं है। मेरा राज्य, तुम्हारा राज्य, इस राज्य का बँटवारा होना चाहिए, ऐसे होना चाहिए, माना खंड़-2 होते जा रहे हैं।

Baba: Atom bombs are ready; the condition of India is like this. India is the oldest country of the world. The older something is, the more sorrow giving it becomes. In no other country of the world there is as much sorrow as in India. So, the main reason for this sorrow is that the sinful conduct (*paapachar*) has increased a lot. And it is ever increasing. It will increase to such an extent that… look so many religions have not been spread in any other country as in India and there is not as much animosity and mutual enmity on the basis of these religions as in India. No other country has as many castes as India. And there is not as much animosity, dispute based on those castes in any other country as in India. There are so many languages in India – Bengali, Punjabi…. Now look here, do you find any Punjabi in Bengal? No Punjabi will be visible in

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Bengal. Very few.... There is no Bengali in Punjab. No other country has as much *statism*[1] as India. My state, your state… this state should be divided; it should happen like this; it means that they are being divided into different parts.

जिज्ञासु- एक ही छोटा ग्राम मे कितने प्रकार के भाषायें भी हैं। एक ही ग्राम में।

बाबा- एक ही गांव में। ये जो विद्वेष के जो तरीके हैं धर्म.... जितने धर्म भारतवर्ष में हैं इतने धर्म किसी देश में भी नहीं हैं। और देशों में एक ही धर्म पनप रहा है और यहाँ दिल्ली। दिल्ली में देखो, दिल्ली दर्पण है पूरे देश का। उसी बराबर के हिस्से में ही किश्चियन भी हैं, बराबर के हिस्से में मुस्लिम भी हैं, बराबर के हिस्से में सिक्ख भी वहाँ देखने को मिलेंगे क्योंकि दिल्ली राजधानी है, कैपिटल है। .....सबसे ज्यादा जो धर्म का जुनून होता है वो मुसलमानों में है। धर्म के जुनून में आके पागल बन जाते हैं।

Student: There are also so many kinds of languages in one small village.
Baba: In just one village. The methods of animosity, religions that are here… No other country has as many religions as India has. In other countries only one religion is prospering and here in Delhi... Look, in Delhi; Delhi is the mirror of the entire country. You can find Christians as well as Muslims as well as Sikhs in the same proportion there. It is because, Delhi is the capital. ..... Maximum fanaticism for religion is among Muslims. They become mad in religious fanaticism.

समयः 33.41-01.01.50

जिज्ञासुः बाबा, हमारा अंतिम इच्छा है।

बाबाः आपकी अंतिम इच्छा?

जिज्ञासु- हमारा अंतिम इच्छा है कि हमारा जो जगह है जगतपुर में.... छोटा जगह खाली पड़ा हुआ है। मैं सोचता हूँ वहाँ एक मंदिर बिठायेंगे।

बाबा- एक बात बताइये।

जिज्ञासु-...मंदिर हमको बनाने का मन में आया है ब्रह्मा, विष्णु, शंकर।

बाबा- ब्रह्मा, विष्णु, शंकर का जो मंदिर बनायेंगे, मंदिर में चैतन्य को बिठायेंगे या जड़ मूर्तियों को ही बैठाना आपने पक्का कर लिया है? मंदिर में आप ब्रह्मा, विष्णु, शंकर की जड़ मूर्तियों को बिठायेंगे या चैतन्य, आपकी समझ में आ जायेगा तो उनको बिठायेंगे?

जिज्ञासु- जड़।...

बाबा- करेंगे। मनुष्य,

जिज्ञासु-...

Time: 33.41-01.01.50

Student: Baba, I have a last wish.
Baba: Your last wish?
Student: It is my last wish that the place that I own in Jagatpur… there is a small vacant plot of land …I have thought of building a temple there.
Baba: Tell me one thing.
Student: …I have thought of building a temple of Brahma, Vishnu and Shankar.

[1] the feeling of belonging to a particular state (province)

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Baba: The temple of Brahma, Vishnu and Shankar that you will build, will you keep the living [idols] (*chaitanya*) in it or have you made up your mind to keep the non-living idols in it? Will you keep the non-living idols of Brahma, Vishnu and Shankar in the temple or will you keep the living [idols] when [their recognition] sits in your intellect?
Student: The non-living ones…
Baba: You will. Human beings…
Student said something.

बाबा- 1 मिनिट-2, मनुष्य मन का उपयोग नहीं करेगा, बुद्धि का उपयोग नहीं करेगा तो क्या जानवर करेंगे? मनुष्य ये फैसला नहीं करेगा कि ब्रह्मा कौन, विष्णु कौन, शंकर कौन? कौन फैसला करेगा? आज की दुनिया के राक्षसी मनुष्य करेंगे? देवतायें तो इस दुनिया में हैं ही नहीं। मनुष्य बनता ही है मनन-चिंतन-मंथन करनेवाला, मन का उपयोग करनेवाला। तो आप तो.... मन है आपके पास। मन माना इच्छा है आपकी.... माना मन तो है। तो मन-बुद्धि के साथ आप फैसला खुद कर सकते हैं। सिर्फ बैठकर समझने की बात है। जब इतने लोग फैसला कर रहे हैं, सबने फैसला कर लिया कि हाँ ब्रह्मा भी है प्रैक्टिकल में, विष्णु भी है प्रैक्टिकल में, शंकर भी है प्रैक्टिकल में। अगर नहीं होते तो.....तो क्या कपड़े का झं□ा विश्व विजय कर के दिखायेगा? विश्व की विजय कप□ का झं□ा नहीं करता है। कोई चैतन्य हुए हैं प्रैक्टिकल में जिन्होंने सारे विश्व के ऊपर विजय प्राप्त की है।

जिज्ञासु- सबसे ब□ा है चैतन्य। चैतन्य में न होने से कुछ भी नहीं होता है। हम सोचा है, लेकिन अभी चैतन्य क्या करेगा, ऊपर वाला क्या करेगा, वो हमको मालूम नहीं है। मगर हमने मन में सोचा है।

बाबा- अगर आपको मालूम पड़ जाये तो?

Baba: Just a minute. Just a minute. If not the human beings, will the animals use their mind and intellect? If a human being does not decide who Brahma is, who Vishnu is and who Shankar is then who else will decide? Who will decide? Will the demoniac human beings of today's world decide it? Deities are not present in this world at all. Only the one who thinks and churns, the one who uses his mind, becomes a human being. So, you… you have a mind. Mind meaning you have a desire means that you do have a mind. So, you can decide yourself with the help of mind and intellect. You just have to sit and understand it. When so many people are deciding, when everyone has decided that yes, there is Brahma, Vishnu and Shankar in *practical*; if they are not present….so, will a flag made of cloth gain victory over the world? A flag made of cloth does not gain victory over the world. There have been some living ones in practical who have gained victory over the entire world.
Student: The greatest ones are the living ones. If they weren't the living ones nothing is possible. I have thought about it, but what will the living one, the one [sitting] above do, now I do not know it. But I have thought in the mind.
Baba: If you come to know, then…

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासु- हमको मंदिर बनाने का मन में आया है। मंदिर हम बनायेंगे उसमें हमारे चैतन्य भी रहेंगे, हमारे मूर्ति भी रहेंगे। दोंनो रहेंगे। मूर्ति न रहने से हमारे चैतन्य भी नहीं आयेंगे ना।

बाबा- ये मूर्ति ही है। ये मूर्ति है। जब इसमें आत्मा है तो चैतन्य है। आत्मा निकल जायेगी तो ये मूर्ति है।

जिज्ञासु- लेकिन मूर्ति को...;;कर के

बाबा- मूर्ति को मानेंगे। मूर्ति तो ज होती है उसमें चैतन्य आत्मा को नहीं मानेंगे?

जिज्ञासु- इतने हजार मूर्ति जो बन रहा है।.....

बाबा- वो बन रहा है लेकिन वो बनने के बावजूद भी... बनानेवाले बना रहे हैं; बनानेवाले बना रहे हैं किस आधारपर? जो शास्त्रों में लिखा हुआ है वही शासन कर रहा है और शास्त्रों को बनानेवाले भी मनुष्य, मनुष्य ही थे लेकिन जिन्होंने वो शास्त्रों की परम्परा और उनकी वो मूर्तियों की परम्परा चलाई है ढ़ाई हजार साल से वो हिस्ट्री मिल रही है मूर्तियाँ बनाने की, शास्त्र बनाने की लेकिन उनके रिजल्ट में दुनिया में प्यार और स्नेह, सहानभूति ये अच्छे गुण है। ये बढ़ रहे है या घट रहे है?

जिज्ञासु- ये तो नहीं बढ़ रहे है। सहानभूति, इच्छायें, प्रेम ये घट रहा है।

बाबा- घट रहा है ना।

जिज्ञासु- मुठ्ठी बंद है लेकिन घट रहा है।

बाबा- इसका मतलब चैतन्य आत्मा को पहचानेंगे तो ये चीज़ें बढ़ेगी।

Student: The thought to build a temple has come in my mind. I will build a temple and our living ones as well as our idols will be there. Both will be there. If there are no idols, the living ones will not come either, will they?

Baba: This (body) itself is an idol. This is an idol. When there is a soul in it, it is a living being. When the soul departs, it is an idol.

Student: But the idol….

Baba: You believe in the idol. An idol is non-living. Will you not believe in the living soul in it?

Student: So many thousands of idols that are being prepared…

Baba: They are being prepared, but despite being prepared…, the makers are making them; the makers are making them, on what basis? Whatever was written in the scriptures is ruling. And the writers of the scriptures were also human beings themselves. But those who followed that tradition of scriptures and the tradition of idols for 2500 years, that history of preparing idols and scriptures is available . But as the result of that, are good virtues like love and affection, sympathy increasing in the world or are they decreasing?

Student: These are certainly not increasing. Sympathy, desire, love is decreasing.

Baba: It is decreasing, isn't it?

Student: The palm is closed, but it is decreasing.

Baba: It means that these things will increase when you recognize the living ones.

जिज्ञासु- और एक बात, घट रहा है ये बात ठीक ही है। हम जब वृंदावन मे हम जितना घूमा है, देखा है एक एक करोपति, इतना अच्छे से मंदिर बनाया। उसका मंदिर, उसका अकोमोिशन उसका सब कुछ देखने से भी दिल में भक्ति आता है। बहुत सा आदमी भी उधर जाता है। ये जो जाता है, उधर में आता है, इसका मतलब क्या होता है ?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

बाबा- इसका मतलब ये है कि एक परम्परा, ट्रेडिशन चली आ रही है। वो ट्रेडिशन के ऊपर सब चल रहे हैं। शायद ऐसा करने से हमको मुक्ति मिल जायेगी। लेकिन अंधश्रद्धा से कभी भी मुक्ति नहीं मिलेगी। भगवान जो है वो ज्ञान देता है, अंधश्रद्धा नहीं देता है। ज्ञान अलग चीज है और अंधश्रद्धा, अंधविश्वास अलग चीज है।

जिज्ञासु- वो एक ही चीज है लेकिन एक ही आदमी को मिलता है क्यों?

बाबा- एक ही आदमी को नहीं, सारी सृष्टि की मुक्ति करनेवाला एक परमपिता परमात्मा है।

जिज्ञासु- एक ही है जो ध्यान से, ज्ञान से उसको मानता है।

बाबा- आप तो मानते हैं। आप भी तो मानते हैं।

जिज्ञासु- हाँ, वही तो बोल रहा हूँ।

बाबा- हम भी मानते थे। हमें अब अनुभव हो रहा है कि हम मिलने के रास्ते पर हैं। आप समझते हैं ये तो हवाई खीर है। ऐसा हो नहीं सकेगा। आप ऐसा समझते हैं लेकिन हो सकेगा। आज आप ऐसा करें दो दिन के बाद, दो दिन में ही, है तो 7 दिन का कोर्स, दो दिन के अंदर ही, हाँ मिल गया-3, हमने पा लिया। ये सब अनुभव कर सकते हैं, तो आप नहीं अनुभव कर सकते?

जिज्ञासु- मैं तो अनुभव कर रहा हूँ लेकिन विश्वास......

Student: Another thing; these virtues are decreasing. It is correct. When I went to Brindavan[2], wherever I roamed I saw that millionaires have built such good temples. Their temples, the accommodation, everything, [the feeling of] devotion comes in the heart on seeing them. Many people go there, what does it mean?

Baba: It means that a tradition has continued. Everyone is following that tradition. [They think] that perhaps by doing so they will be liberated. But we can never attain liberation through blind faith. God gives knowledge and not blind faith. Knowledge is something different and blind belief, blind faith is something different.

Student: That is the same thing. But why does only one person get it?

Baba: It is not attained by only one person. The one who liberates the entire world is the one Supreme Father Supreme Soul.

Student: There is only one person who accepts Him through meditation, through knowledge.

Baba: You accept it. You too accept it, don’t you?

Student: Yes, that is what I am saying.

Baba: We believed it too. We are now feeling that we are on the path of meeting (God). You think it is porridge in the air. It cannot be possible. You feel so; but it is possible. Do one thing; after two days; in just two days; it is a seven days course, but within two days… when all these people can experience that ‘we got it, we got it, we have achieved it’, so, can’t you experience it?

Student: I am experiencing, but faith……

बाबा- चैतन्य की बात है। आप जड़ मूर्ति की बात कर रहे हैं। हमने चैतन्य की बात कही। हमारे यहाँ भारत वर्ष का जो तिरंगा झंडा है। तिरंगा झंडे में तीन कपड़े है। तीन कपड़े ये कपड़ा किस बात की यादगार है? ये शरीररूपी वस्त्र है। क्या? ये शरीर है वस्त्र और इस वस्त्र को पहननेवाली है आत्मा। क्या? ये तीन प्रकार के वस्त्र हुए हैं संसार में - ब्रह्मा, विष्णु, शंकर। ब्रह्मा

[2] a holy place for Hindus

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

जो वस्त्र है वो हरा ही हरा माना उनकी बुद्धि में बैठा है कि रामराज्य आयेगा, हरियाली आयेगी, हरी क्रान्ति आयेगी, स्वर्ग आयेगा-2 - यही बुद्धि में बैठा हुआ है। विष्णु - दूसरी मूर्ति वो स्वर्ग का देवता, निश्चय पक्का। और एक है उससे भी ऊपर - हम न नर्क में और न स्वर्ग में - दोनों हमारे लिए एक जैसे हैं। स्वर्ग मिल जाये, सुख की दुनिया मिल जाये तो खुश नहीं और दुःख की दुनिया मिल जाये तो उन्हें दुःख नहीं। माना शांत स्टेज में रहनेवाला वो है शंकर। वो है शंकर। लेकिन जो शंकर है वो महादेव कहा जाता है। ब्रह्मा से भी ऊँचा देव, विष्णु, विष्णु से भी ऊँचा देव महादेव। लेकिन महादेव जो है वो महादेव शंकर का नाम ही सिर्फ परमात्मा के साथ जोड़ा जाता है। 33 करोड़ देवात्मायें हैं लेकिन किसी का नाम शिव के साथ जोड़ा नहीं जाता। शिव वो आत्मा है जो जन्म-मरण के चक्र में आती ही नहीं कभी। हम और आप जन्म–मरण के चक्र में आ रहे हैं। शरीर छोड़ रहे हैं, फिर शरीर ले रहे हैं फिर शरीर छोड़ रहे हैं, फिर शरीर ले रहे हैं। लेकिन वो आत्मा ऐसी है शिव - वो कभी भी जन्म-मरण के चक्र में नहीं आती। वो भी जन्म-मरण के चक्र में आ जाये तो हमको छु□ानेवाला कोई नहीं।

Baba: It is about the living ones. You are speaking about the non-living idols. I spoke about the living ones. The tricolor flag of India has three cloths (in three colours). These three cloths, this cloth is a memorial of what? These are cloth like bodies. What? This body is a cloth and the one who wears this cloth is the soul. What? There have been these three kinds of cloths in the world – Brahma, Vishnu and Shankar. The cloth Brahma is completely green, i.e. his intellect thinks that the kingdom of Ram will come, greenery will come, green revolution will come, and heaven will come. This is in his intellect. The second personality Vishnu is the deity of heaven; he has a firm faith. And one is higher than him; I am neither in hell nor am I in heaven, for me both hell and heaven are one and the same. He does not become happy if he gets heaven or a world of happiness and he does not become sorrowful if he gets a world of sorrow. It means that the one who remains in a calm stage is Shankar. He is Shankar. But Shankar is called *Mahadev* (the greatest deity). A deity higher than Brahma is Vishnu and higher than Vishnu is *Mahadev*. But only the name of that *Mahadev* Shankar is added to the Supreme Soul (Shiv). There are 330 million (33 crore) deity souls, but nobody's name is added with that of Shiv. Shiv is such a soul who never comes in the cycle of birth and death. I and you pass through the cycle of birth and death. We leave bodies and we take bodies; again we leave bodies and again we take up bodies. But that soul, Shiv is such that He never passes through the cycle of birth and death. If He too passes through the cycle of birth and death then there will be no one to liberate us.

बाबा- शिव आत्मा अलग है, शंकर की आत्मा अलग है। शिव है परमपिता परमात्मा और शंकर है देवता। 33 करोड़ देवताओं में से ऊँचे ते ऊँचे देवता का नाम है शंकर। तीन देवताओं की हमने अगर पूरी जानकारी कर ली तो सच्चा मंदिर बनाने में हम सहयोगी बनेंगे। उससे दुनिया स्वर्ग बनेगी और वो परमपिता परमात्मा शिव ही इस सृष्टि पर आकर के नर्क को स्वर्ग बनाता है। न इब्राहिम इस्लाम धर्म स्थापन करनेवाले, न महात्मा बुद्ध, दुनिया में इतना बड़ा बौद्ध धर्म फैला हुआ है उन्होंने भी स्वर्ग स्थापन नहीं किया, न क्राईस्ट दुनिया में इतने बड़े तादाद में क्रिश्चियन फैले हुए है देश-देशान्तर में न उन्होंने पैरा□ाईज स्वर्ग स्थापन किया, न मुहम्मद, न गुरूनानक, न शंकराचार्य। कितने बो□ा2 महान धर्मपिता हुए लेकिन किसी ने भी स्वर्ग बना के नहीं दिखाया। सभी इसी दुनिया में मिट्टी चाटते चले गये। कौन बनाता है? उन धर्मपिताओं का

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

भी बापों का भी बाप जो परमपिता है उसको वो भी मानते हैं गॉ□फादर। वही जब इसी सृष्टि पर आता है तब ये सारी सृष्टि की हर धर्म की आत्माओं को चुनता है। श्रेष्ठ-2 हर धर्म में होते है। कोई धर्म ऐसा नहीं है जिसमें अच्छाई न हो, कोई धर्म ऐसा नहीं जिसमें अच्छे और बुरे दोंनो तरह के लोग न हो। हर श्रेष्ठ आत्माओं को चुनकर के फिर उनका संगठन तैयार करता है। उस संगठन से नई दुनिया के रीति-रसम-रिवाज... इस दुनिया में थोड़े से लोग रहेंगे बाकी सब एटम बम्ब के आग में भस्म हो जायेंगे।

Baba: The soul Shiv is different; the soul of Shankar is different. Shiv is the Supreme Father Supreme Soul and Shankar is a deity. Among 330 million deities, the name of the highest deity is Shankar. If we know the three deities completely, we will become helpers in building the true temple. It will make the world heaven and only that Supreme Father Supreme Soul Shiv comes in this world and transforms hell into heaven. Neither Abraham, who established the Islam religion, nor Mahatma Buddha, who established such a big religion Buddhism which is spread all over the world establish heaven. Neither did Christ, [whose followers] the Christians are spread all over the world in different countries in such big numbers, establish heaven nor did Mohammad, Guru Nanak or Shankaracharya [establish heaven]. There have been so many great [and] famous religious fathers, but nobody could make the world heaven and show. All of them went on merging with the soil of this world. Who makes it (a heaven)? The father of the father of even those religious fathers, the Supreme Father; even they consider Him to be God the Father; when He comes in this very world, He Himself selects the souls of every religion of the entire world. There are righteous ones in every religion. There is no such religion which does not have goodness in it; there is no such religion which does not have both good and bad people in it He selects the righteous souls from among them and prepares their gathering. The traditions and rituals of the new world [begin] from that gathering… There will be very few people in this world; the rest will be burnt to ashes in the fire of atom bombs.

जिज्ञासु- कोई-2....सृष्टि के नियम ऐसा है कि...

बाबा- है नियम। वो टाईम अभी आ गया आज से 70 साल पहले न एटमबम्ब बने थे और न भगवान सृष्टि पर आया था। दोंनो ही काम होने हो रहे हैं।.....चल रहा है। दुनिया की गर्वमेन्ट भी मान रही है, यहाँ के हिंदु लोग भी मानते हैं ब्रह्मा, विष्णु, शंकर। मानते हैं ना? इतना ही नहीं मुसलमान लोग भी वो फरिश्ताओं को मानते हैं जो ब्रह्मा, विष्णु, शंकर के रूप में थे। उस आदिपुरूष को मानते हैं जो आदिपुरूष सृष्टि के आदि में था। अपने यहाँ उनको कहते हैं शंकर, मुसलमानों में उसको कहते हैं आदम, क्रिश्चियनों में उसको कहते हैं ए□म, जैनियों में उनको कहते हैं आदिनाथ। माना सृष्टि का आदिपुरूष एक ही है जिसके आधारपर ये सृष्टि चल रही है। उस आदिपुरूष में वो शिव जो ज्योर्तिबिंदु है, तुरिया, जन्म-मरण के चक्र में न आनेवाला वो प्रवेश करता है और प्रवेश कर के सारा ज्ञान सुनाता है। ज्ञान मतलब ये अंधश्रद्धा नहीं सिखाता है। एक-2 बात का कारण-कार्य का विश्लेषण कर के बताता है। अंधश्रद्धा मनुष्यों ने सिखाई है, मनुष्य गुरूओं ने सिखाई है। रावण के 10 शीश होते थे, कुंभकर्ण 6 महीने सोता था ऐसी-2 जो बातें हैं वो मनुष्यों ने सिखाई है। भगवान इस तरह की बातें; जिनका आगा-पीछा है ही नहीं वो नहीं सीखता है। वो हर बात को क्लीयर कर के बताता है ये बात ऐसी-3 है।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Student: Some of the rules of the world are such that….
Baba: There are rules. That time has come now. 70 years ago neither atom bombs were prepared nor did God come in this world. Both the tasks are going on….. it is going on. The government of the world is also accepting; the Hindu people of this place also accept Brahma, Vishnu, and Shankar. They accept, don't they? Not just this; the Muslims also believe in the angels who were in the form of Brahma, Vishnu, Shankar. They believe in the first man who existed in the beginning of the world. Here they call him Shankar, the Muslims call him Aadam, the Christians call him Adam, the Jains call him Adinath. It means that the first man of the world is only one on whose basis this world continues to exist. . Shiv, the point of light, the unique one, the one who does not come in the cycle of birth and death enters that first man and after entering him He narrates the complete knowledge. Knowledge means that He does not teach blind faith. He explains everything by analyzing the task and its reason. Human beings have taught blind faith. Human gurus have taught this. Ravan had ten heads, Kumbhakarna used to sleep for 6 months; Human beings have taught such things. God does not teach such things which do not have any base. He makes everything clear, this is like this and like this and like this.

जिज्ञासु- जो ज्ञान हम लोग सुनते हैं; देने के लिए वो दिमाग होना चाहिए वो तो होता नहीं।
बाबा- दिमाग होने के लिए ही तो भगवान आकर के अभी बता रहे है....
जिज्ञासु- दिमाग में घुसता नहीं है।
बाबा- कारण बता रहे हैं ना क्यों नहीं घुसता। अभी दिमाग में घुसा हुआ है गु और गु मूत की सृष्टि। क्या? टट्टी-पेशाब में जो रमे रहते हैं वो बड़ा सुख मानते हैं - वाह। वो जो सृष्टि है वो दिमाग में भर गई। जिस दिमाग में ट्टी-पेशाब भर गई हो उसमें ईश्वर का ज्ञान बैठेगा?
जिज्ञासु- नहीं बैठेगा।
Student: We should have brains to give the knowledge that we listen; we don't have that.
Baba: God has come and is narrating (knowledge) in order to make us intelligent…
Student: It does not enter in the intellect.
Baba: I am telling you the reason why it does not enter, ain't I? Now dirt and the creation of dirt[3] (i.e. lust) has entered the intellect. What? Those who remain busy in dirt consider it to be great pleasure – wow! Our intellect is full of that world. Will the knowledge of God sit in the intellect which is full of dirt?
Student: It will not.

बाबा- इसलिए भगवान... इस ज्ञान की एक शर्त है कि सात दिन कोर्स तो ले लेकिन सात दिन पवित्र जीवन बिताये। क्या? जैसे भक्तिमार्ग में, शास्त्रों में अनुष्ठान वैगरा बनाये हैं वो 7 दिन रामायण की कथा करेंगे, भागवत की कथा करेंगे तो इतने बड़े पवित्र होकर के सात दिनों में विकारी जीवन नहीं बितायेंगे। स्त्री-पुरूष अलग-2 रहकर के और.....। ये नियम शास्त्रों के अनुसार है। लेकिन अभी भगवान आकर के स्वंय ये नियम बना रहे है कि 7-8 दिन अपनी बुद्धि को पक्का कर लो, ये दृढ़ निश्चय बनाओ कि हमे ये जो संबंध है, विकार है जिसने हमारी बुद्धि को नष्ट कर रखा है ये हम भोगेंगे नहीं। बस। उस सात दिन की तपस्या में ही ज्ञान बुद्धि

[3] Gu and gu muut meaning faeces and urine

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

में बैठ जायेगा और एक बार मन में, बुद्धि में वो बात बैठ गई, बुद्धि ने वो कैच कर ली फिर उसके बाद चल पड़ेंगे।

जिज्ञासु- कैच करेंगे तब ना।

बाबा- अरे, दृढ़ता क्या नहीं कर सकती।

जिज्ञासु- करती है लेकिन मनुष्य जीवन में ऐसा है...हम लोग

Baba: This is why God… there is a condition in this knowledge that you should undergo the seven days course but during that course you should lead a pure life. What? For example, in the path of *bhakti*, rituals etc. have been prescribed in the scriptures; when they organize the recitation of the Ramayana for seven days, when they organize the recitation of the Bhagwat, they lead a very pure life for seven days, they will not lead a life of lust. The wife and husband live separately and…..These rules are as per the scriptures. But now God Himself has come and is making these rules that for 7-8 days you should resolve in your intellect, make a firm resolution that we will not enjoy the pleasure of these relationships, these vices, which have destroyed our intellect. That is all. The knowledge will sit in the intellect during the *tapasya* of those seven days. And once that sits in the mind, in the intellect, once the intellect catches that, you will start following it.

Student: That is possible only when we catch it, isn't it?

Baba: Arey, what is not possible with determination?

Student: It can, but the human life is such that….we people….

बाबा- अच्छा एक बात बतायें।

जिज्ञासु- ना-2।

बाबा- सिर्फ 1 बात। निगेटिविटी ज्यादा अच्छी है या पॉजिटिविटी ज्यादा अच्छी है? पॉजिटिव संकल्प करना अच्छा है या निगेटिव संकल्प करना ज्यादा अच्छा है? निगेटिव माना...ये सब बहुत मुश्किल है और एक पॉजिटिव नहीं भगवान हमारा साथी है तो क्या नहीं हो सकता। हिम्मते बच्चे मददे खुदा है।

जिज्ञासु- सब कुछ सुनता भी है, सब कुछ सोचता भी है लेकिन बात एक ही हमारे दिमाग में चलता है कि कैसे घुसे?

बाबा- घुसे? बताया ना। तरीका बताया क्यों नहीं घुसता है? अच्छी बात लोंगो के बुद्धि में क्यों नहीं घुस रही है? क्योंकि जो रास्ता हम पकड़े हुए है वो सृष्टि का रास्ता ही गलत हो गया है। सृष्टि बनाने का, सृष्टि तैयार करने का, सृष्टि चलाने का, सृष्टि की पैदाईश करने का जो तरिका है बुद्धि में वो गू-मूत की सृष्टि बनाई हुई है द्वापरयुग से।

जिज्ञासु- इसी लिए तो आदमी का दिमाग कमजोर होता जा रहा है दिन से दिन।

Baba: OK, tell me one thing.

Student: No, no.

Baba: Just one thing. Is negativity better or positivity better? Is it better to create positive thoughts or to create negative thoughts? Negative means ….. 'all this is very difficult' and one is (to think) positive – 'No, God is our companion then what is impossible!' If the children show courage, God is ready to help.

Student: We hear everything, we think about everything, but one thing that my intellect thinks is that how should it enter the intellect?

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Baba: How should it enter? I have told you the method, haven't I? Why are good things not entering people's intellect? It is because the path of creation which we are following is wrong. The method of creating the world, of making the world, the method of running the world, the method of reproducing that is in the intellect… they have created a world of dirt (i.e. lust) since the Copper Age.
Student: This is why man's intellect is going on becoming weak day by day.

बाबा- कमजोर होता जा रहा है वो मन-बुद्धि लगातर चारों तरफ दुनिया में फैल रही है, रात को सोते समय भी मन इधर-उधर भटक रहा है । उसका तरीका भी तो भगवान ने बताया होगा? भगवान अभी आकर के तरीका बता रहा है कि देखो तन बल जो है, इस तन का बल, शरीर का बल ये भी क्षीण होता है। तन बल मनुष्य समझता है कि हम बड़े पहलवान बन जायेंगे, हम सारी दुनिया को जीत लेंगे, सबके ऊपर कन्ट्रोल कर लेंगे। तन बल-तन के आधारपर धन कमाते हैं पैसा। बैंक-बैलेन्स भरपूर करते हैं। उसके आधार पर बहुत नशा चढ़ता है कि हमने इतना धन कमा लिया।
जिज्ञासु- उसका नाम भी हुआ।
बाबा- बहुत नाम हो जाता है। बड़ा साहूकार आदमी। तो तन बल, धन बल और.....बहुत लम्बा-चौ□□हो जाये, बहुत भाँति बन जाये, बहुत दोस्त बन जाये, बहुत फॉलोअर्स बन जाये वो है जन बल। क्या? किसी का परिवार बहुत बड़ा होता है तो उसको नशा रहता है ये तुम हमारा क्या बिगाड़ सकता है। .....हमारा परिवार कितना बड़ा है तो कोई कुछ नहीं कर सकता जनबल। ये तीन बल जो हैं मनुष्यों के पास बहुत अहंकार बढ़ानेवाले हैं लेकिन जो असली बल है, जो जन्म से ही मिला है भगवान से उसकी तरफ कोई ध्यान नहीं दे रहा है वो है मनोबल।

Baba: It is going on becoming weak. That mind and intellect is wandering all over the world continuously; even while sleeping in the night the mind is wandering here and there. God must have narrated the method for [correcting] that too? God is now narrating the method – look, the physical power, the power of this body is decreasing. Human being thinks about the physical power that he will become a wrestler; he will win the entire world; he will control everyone. They earn wealth on the basis of the physical power, through the power of the body. They fill their bank balance. They become intoxicated on its basis that they have earned so much wealth.
Student: They earn fame too.
Baba: They become very famous. A very prosperous person. So, physical power, the power of wealth… He may grow very tall and strong, he may have many relatives, he may have many friends, he may have many followers; that is the power of people. What? If someone's family is very big, he feels proud: hey! You cannot bring any harm to us….. Our family is so big so nobody can do anything; that is people power. These three powers of the human beings increase their ego, but nobody pays attention to the true power, which we have received by birth from God, that is the power of mind.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Time: 50.12

बाबा- मनोबल, जब से आदमी पैदा हुआ है उसको भगवान से दात मिली हुई है मन-बुद्धि की। हर आदमी... इनको अपने तरीके की मन-बुद्धि मिली हुई है, इनको अलग मिली हुई है, इनको अलग मिली है-2। भगवान की दात मिली हुई है उसकी कदर नहीं करनी चाहिए? पहले तो हम मन-बुद्धि की कदर करें। मन का क्या हाल है? धन इकट्ठा कर रहे हैं, बैंक-बैलेन्स बढ़ रहा है, तन की ताकत बढ़ा रहे हैं, अच्छा-2 खा रहे हैं, अच्छी-2 प्रैक्टिस कर रहे हैं, वर्जिश कर रहे हैं तन की ताकत बढ़ा रहे हैं। जन बल की ताकत बढ़ाने के लिए कितना हम टाईम देते हैं लेकिन मनोबल की ताकत बढ़ाने के लिए किसी के पास कोई साधन नहीं है? वो भगवान आकर के बताता है। क्या बता रहा है? बच्चे सुबह से लेकरके शाम तक तुम्हारा मन चारों तरफ भटक रहा है। इधर जाता है, उधर जाता है, इधर जाता है। धन तो इकट्ठा कर रहे हैं बैंक में लेकिन मन बिखर रहा है। मन जो है वो बिखर रहा है। अब भगवान आकरके बता रहे हैं बच्चे मन को अगर तुमको एक्राग करना है तो सबसे पहले अपने आपको पहचानो। तुम एक बिन्दु आत्मा हो। बैठ जाओ याद में। देह की स्मृति से बुद्धि हटाके इस स्टार को याद करो। प्रैक्टिस करो कितनी देर स्थिरियम दिमाग को रख सकते हैं। चलते, ...

जिज्ञासु- वही तो बहुत मुशकिल है

बाबा- फिर? प्रैक्टिस करने से क्या नहीं; प्रैक्टिस मेक्स ए मैन परफेक्ट। गीता में भी लिखा है- अभ्यासेन तु कौन्तेय, वैराग्येण च गृह्यते।

Baba: As regards the power of the mind, ever since man was born he has received the gift of mind and intellect from God. Every person… this one has received mind and intellect of his kind and that one has received mind and intellect of a different kind, that one another kind. Should we not give importance to God's gift that we have received? First we should give value to mind and intellect. What is the condition of the mind? People are collecting wealth, people are increasing bank balance; people are increasing the physical power; people are eating nice things; people are practicing well; people are exercising; people are increasing the physical power. We give so much time to increase the people power. But nobody has any facility to increase the power of the mind. God comes and tells us that. What is He telling? Children, your mind is wandering everywhere from morning to evening. It goes here, it goes there; it goes here. You are indeed collecting wealth in the bank, but the mind is scattering. The mind is scattered. Now God comes and tells you: Child, if you wish to concentrate your mind, first of all realize yourself. You are a point soul. Sit in remembrance. Divert the intellect from the awareness of the body and remember this star. Practice it and try how long you can keep your intellect stable in this. While walking…

Student: That alone is very difficult.

Baba: Isn't it? What isn't [possible] by practice; practice makes a man perfect. It has been written in the Gita as well, *Abhyasen tu Kaunteya, vairagyen cha grahyate* (O son of Kunti! you will achieve detachment if you practice).

जिज्ञासु- टाईम नहीं मिलता है बाबाजी। अभी हमको तो...

बाबा- टाईम, अभी आप तो नौकरी से भी मुक्त हो गये।

जिज्ञासु- हम तो.... हमारा सब मुक्त है

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

बाबा- दूसरों की बात छोड़ दीजिये। आप तो नौकरी से भी मुक्त हो गये। आपके पास टाईम ही टाईम है। **जिज्ञासु-** टाइम ही टाइम है।

बाबा- हाँ, तो आप उस कॉन्सेन्ट्रेशन के लिए जो भगवान आकर के सिखा रहा है वो कॉन्सेन्ट्रेशन का नाम है सहज राजयोग। क्या? राजयोग इसलिए नाम दिया गया है कि दुनिया में मास्टर बनते हैं, वकील बनते हैं, □ॉक्टर बनते हैं, इंजिनियर बनते हैं वो मनुष्य पढ़ाई पढ़ाते हैं तो बनते हैं। मनुष्यों की पढ़ाई हुई पढ़ाईयों से ये बनते हैं। लेकिन भगवान जो पढ़ाई पढ़ाते हैं न मास्टर बनाते हैं, ना टीचर बनाते हैं, ना वो इंजिनियर बनाते हैं, न □ॉक्टर बनाते हैं वो आकरके राजाओं का राजा बनाते हैं। आप बताईये कोई ऐसी दुनिया की कोई ऐसी युनिवर्सिटी, कोई ऐसा विश्व विदयालय, कोई विद्यालय हुआ हो तो हमें बताओ जहाँ राजाई करना, कन्ट्रोलिंग पॉवर ग्रहण करना किसीने सिखाया हो?

जिज्ञासु- नहीं सिखाया।

Student: Babaji, time is not available for that. Now I….
Baba: Time? Now you have become free from job.
Student: I… I am totally free.
Baba: Leave the subject of others. You have become free from job too. You have ample time.
Student: Ample time.
Baba: Yes, for [achieving] that concentration that God is teaching after coming… the name of that concentration is easy *Rajyoga*. What? It has been named *Rajyoga* because; people become *masters* (i.e. teachers), advocates, doctors, engineers, in the world; they become that when human beings teach them. People become this by studying the knowledge taught by human beings. But in case of the knowledge that God teaches, He neither makes us masters, nor teachers, nor engineers, nor doctors; He comes and makes us king of kings. You tell us, is there any such University, any such school of the world where someone has taught to rule, to obtain controlling power?
Student: Nobody has taught.

बाबा- ये मन को कन्ट्रोल करना, जितना हम मन को कन्ट्रोल करेंगे उतनी हमारी इन्द्रियाँ कन्ट्रोल होंगी। इन्द्रियाँ जीते जगत जीत कहा जाता है, मन जीते जगत जीत कहा जाता है। मन को जीत लिया माना सारी माया को जीत लिया। ये भगवान आकर के हमको मन की कन्ट्रोलिंग सिखा रहा है। अब भगवान सिखा रहा है तो हम क्यों नहीं सीखेंगे? एक बार ये पहचानने की जरूरत है कि भगवान इस सृष्टि पर आ चुका है। 70 साल पहले न भगवान आया था और न इस दुनिया की विनाश की सामग्री तैयार कराई थी। नामनिशान मनुष्यों के बुद्धि में नहीं था एटमबम्ब क्या चीज़ होती है। 70 साल के अंदर भगवान इस सृष्टि पर आया और इस सृष्टि पुरानी दुनिया दुखदाई सृष्टि है इसके विनाश का सामान भी तैयार कराना शुरू कर दिया। दोंनो चीजें तैयार हैं- ज्ञान के आधारपर नई दुनिया का संगठन तैयार हो रहा है। गाँव-2 में, शहर-2 में वो ब्राह्मणों की दुनिया तैयार हो रही है ब्रह्मा के द्वारा।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Baba: As regards controlling the mind, the more we control our mind, the more our organs will be under control. It is said that the one who conquers the bodily organs conquers the world; the one who conquers the mind conquers the world. If you conquer the mind, it means that you have conquered *maya* (illusion). God has come and is teaching us the [method] of controlling the mind. Now God is teaching; so why won't we learn it? There is a need to recognize once that God has come in this world. 70 years ago, neither God had come nor did He have the material of destruction of the world prepared. There was neither the name nor the trace in the intellect of human beings what an atom bomb is. Within 70 years God came to this world and He began enabling the preparation of materials of destruction of this old world which is a sorrowful creation. Both the things are ready: The gathering of new world is getting ready on the basis of knowledge. The world of Brahmins is getting ready in every village, every city through Brahma.

ब्रह्मा की औलाद को ही ब्राह्मण कहा जाता है। क्या? शिव की औलाद को शैव कहा जाता है, विष्णु की औलाद को वैष्णव कहा जाता है। माना एक मात्रा बढ़ जाती है बच्चे के अर्थ में या फालोअर्स के अर्थ में। ब्रह्मा की औलाद, ब्रह्मा के फालोअर्स वो ब्राह्मण हुए। जिन की औलाद जैन हुए। एक मात्रा बढ़ गई ना। तो ब्रह्मा के द्वारा नई सृष्टि की स्थापना के लिए अब ब्राह्मणों के द्वारा कार्य हो रहा है। नया संगठन तैयार हो रहा है। आप कहेंगे कैसे हम माने? प्रूफ बताओ। प्रूफ चाहिए ना। आपने सुना होगा.... ब्रह्माकुमारी विश्व विद्यालय का नाम कभी सुना? ब्रह्माकुमारियों का नाम सुना? नहीं सुना। आप प्रैक्टिकल में देखके आईये जाके। अभी इस सृष्टि पर गाँव-2 में, शहर-2 में और देश-देशान्तर में ब्रह्माकुमारी विश्व विदयालय खुले हुए है। हमारे ऊपर विश्वास नहीं। हम तो दीगर आदमी है। आपके जो संगी-साथी हैं उसी लाईन के, आप उनसे बात करिये। हम आपको सिर्फ ले चलकर दिखा सकते हैं कि इंडिया के हर शहर में, इंडिया के हर गाँव में वो ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय फैले हुए हैं। जिनमें ऐसे ही सफेद पोशधारी ब्राह्मण जो हैं वो अपना पुरूषार्थ कर रहे हैं, तपस्या कर रहे हैं, ज्ञान-योग-धारणा-सेवा कर रहे हैं। प्रूफ तो पक्का मिल रहा है उनका। हेडऑफिस माउन्ट आबू है।

Brahma's children are themselves called Brahmins. What? Shiv's children are called *Shaiv* . Vishnu's children are called *Vaishnav*. It means that one syllable increases in the context of children or in the context of followers. Brahma's children, Brahma's followers are Brahmins. Jin's children are Jain. One syllable has increased, hasn't it? So, a task is going on through us Brahmins for the establishment of the new world through Brahma. A new gathering is getting ready. You may say: how should we believe it? Give us proof. You want a proof, don't you? You must have heard… did you ever hear the name of Brahmakumari Vishwa Vidyalaya? Did you hear the name of Brahmakumaris? You haven't. Now go and see in practice. Now in this world, Brahmakumari Vishwavidyalaya has been opened in every village, every city and every country. You do not have faith in me. I am a stranger to you. You can talk to your companions of your line. We can take you and show how Brahmakumari Vishwa vidyalaya is spread in every city of India, every village of India. There are white dressed Brahmins like these who are making *purusharth* (spiritual effort), doing *tapasya*, practicing knowledge, *yoga*, inculcation of virtues and service. There is a firm proof [of those people]. Their head office is in Mount Abu.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासु-..... हे□ऑफिस तो नहीं देखा हमने पर ब्रिंदावन में...

बाबा- हाँ, वृंदावन में भी है ब्रह्माकुमारियाँ। लेकिन ब्रह्मा के जो ब्राह्मण बच्चे पैदा होते हैं, ब्रह्मा ने मुख से जो ज्ञान सुनाया उस ज्ञान का नाम प□ता है वेद। कहते है ब्रह्मा के मुख से वेदवाणी निकली। उस वेदवाणी को सुनकर के जो ब्राह्मण पैदा हुए वो दो प्रकार के ब्राह्मण होते हैं। एक होते है श्रेष्ठ पुरूषार्थी ब्राह्मण। जैसे गुरू वशिष्ठ, विश्वामित्र जैसे और एक होते है रावण, कुंभकर्ण, मेघनाथ जैसे निकृष्ठ नीची कोटि के ब्राह्मण। नीची कोटि के क्यों? मुख से बोलते तो ज्ञान ज्यादा हैं लेकिन प्रैक्टिकल कर्मों में वो ज्ञान देखने में नहीं आता। तो ऐसों की संख्या बहुत होती है।

Student: I didn't see the head office but is it there in Vrindavan…

Baba: Yes, Brahmakumaris are present in Vrindavan also. But the Brahmin children who are born from Brahma; the knowledge that Brahma narrated through his mouth is named *Veda*. It is said that the versions of *Veda* emerged from the mouth of Brahma. The Brahmins that were born by listening to those versions of *Veda* are of two kinds. One are elevated *purusharthi* Brahmins. For example, the ones like Guru Vashishth, Vishwamitra and one are Brahmins like Ravan, Kumbhakarna, Meghnaad of degraded lowly category. Why do they belong to lower category? They speak more knowledge through the mouth indeed, but that knowledge is not visible in practical actions. So, the number of such [Brahmins] is huge.

अभी भी ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विदयालय तो □र के □र खुले हुए हैं लेकिन उनमें निकृष्ठ ब्राह्मण □र सारे फैले हुए हैं। तो जो श्रेष्ठ ब्राह्मणों का संगठन अलग से तैयार होता है वो फिर कहा जाता है - वो बाप को भी जानते हैं और अम्मा को भी जानते हैं। क्या? कोई बच्चा ये कहे कि हमारी अम्मा का नाम ये है। उसे कोई दूसरा पूछे कि अम्मा का नाम बताते हो तुम बार-2 बाप का नाम क्यों नहीं बताते। वो कहता है- नहीं, माँ से ही, माँ ही दुनिया में सब कुछ श्रेष्ठ है। माँ के ही हम बच्चे हैं, बाप तो कोई बात नहीं, बाप तो कोई भी हो सकता है। इसका मतलब औरस संतान हैं या चोरी चकारी की औलाद है? कोई बच्चा अपनी माँ का नाम बार-बार बताये और बाप का नाम न बतावे उससे क्या साबित हुआ? असल बाप की औलाद है या नकली बाप की औलाद है?

Even now numerous *Brahmakumari Ishwariya Vishwa Vidyalayas* are open but numerous degraded Brahmins are spread in them….. So, the gathering of righteous Brahmins that gets ready separately is called… they [are the ones who] know the Father as well as the Mother. What? If a child says, this is the name of my mother. If someone else asks him: you say the name of your mother again and again; why don't you say the name of your father? He says: No, from the mother… the mother is everything and the greatest in the world. We are children of only the mother. The father does not matter. Anyone can be the father. It means that, is he a legitimate child or an illegitimate child? If a child takes the name of his mother repeatedly and does not say the name of his father, then what does it prove? Is he the child of the true father or the false father?

जिज्ञासु- वो तो बहुत दूर का बात है लेकिन बच्चे जो समझते हैं कि हम माँ के गर्भ से.....

बाबा- माँ के गर्भ से पैदा हुए, माँ ने हमको अपना ही परिचय दिया है। बाप का परिचय हमारी माँ ने नहीं दिया। इससे मतलब हो जाता है कि निवृत्तिमार्ग की औलाद है, प्रवृत्तिमार्ग की औलाद

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

नहीं है। एक भारत देश में सिर्फ देवी-देवतायें ही ऐसे हुए हैं जो प्रवृत्तिमार्ग की औलाद हैं और बाकी ये क्रिश्चियन, ये मुसलमान ये सिक्ख, ये ईसाई ये सब निवृत्तिमार्ग वाले हैं। माता-पिता दोनों को नहीं माननेवाले हैं। ये सब निवृत्तिमार्ग धर्म हैं जो दुनिया में फैले हुए हैं।

Student: That is a far off idea. But children think that they have been born through the mother's womb….

Baba: We were born through the mother's womb; the mother has given us only her introduction. The mother did not give us our father's introduction. It means that he is a child of the path of renunciation; he is not the child of a path of household. Only in India there have been only the deities who are children of the household path; and as regards these Christians, Muslims, Sikhs, Christians - all of them belong to the path of renunciation. They do not accept both mother as well as the father. All these are the religions that believe in the path of renunciation which have spread all over the world.

58.47

बाबा- भगवान आकर के प्रवृत्तिमार्ग की देवी-देवताओं की स्थापना करता है। और जब स्थापना करता है तो ब्रह्मा द्वारा दो तरह के ब्राह्मण पैदा होते हैं। उनमें एक होते हैं निवृत्तिमार्ग वाले ब्राह्मण और एक होते प्रवृत्तिमार्ग वाले ब्राह्मण। जो प्रवृत्तिमार्ग वाले ब्राह्मण हैं वो बाप और माँ दोंनो को पहचान लेंगे । बाप कौन है? बाप है वो शिव शंकर भोलेनाथ। माँ कौन है? ब्रह्मा हमारी माँ है। ब्रह्म माना बड़ी, माँ माना माँ। दुनिया की बड़े ते बड़ी माँ। माँ क्या करती है? माँ बहुत सहन करती है। माँ जितना बच्चे की पालन-पोशण में सहन करती है उतना कोई करता नहीं है। तो ब्रह्मा ने इन ब्राह्मणों की पैदाईश में और इनकी पालन-पोषण में जितना सहन किया उतना आज तक कभी किसी ने न किया है और न कभी कोई करेगा। लेकिन उस ब्रह्मा के अंदर बीज ड़ालनेवाला अहम बीज प्रदहपिता, वो कौन है? ये फिर तत्व की बात है। गीता में बोला हुआ है कि मैं बीज ड़ालनेवाला पिता हूँ। ज्ञान का बीज मैंने ड़ाला है। जो ब्रह्मा के मुख से निकलता है वेदवाणी। तो 70 साल पहले परमात्मा ने आकर वो ज्ञान का बीज भी ाला। माउन्ट आबू में वो संस्थान तो खुला हुआ है लेकिन उसमें से जो श्रेष्ठ ब्राह्मण हैं वो भी अभी दुनिया में फैल रहे हैं। उनकी संख्या बहुत थोड़ी है जैसे पाँच पाण्ड़व थे। बहुत मुठ्ठी भर, थोड़े से और बाकी कौरव और यादव ढ़ेर के र चारों तरफ फैले हुए हैं। तो अभी यही स्थिति है। ये सात दिन का कोर्स लेने के बाद आपको सारी बात समझ में आ जायेगी। ज्यादा टाईम नहीं देना। 1-2 घंटा रोज बस लेकिन ब्रहमचर्य पूर्वक।

जिज्ञासु- अभी तो ब्रहमचर्य ही हैं और क्या है?

बाबा- अरे, नहीं-2, 70 साल के लोग बच्चे पैदा करते रहते हैं। ऐसी कोई जरूरी नहीं है। ये आपकी वृत्ति अलग है। और तुरंतदान महाकल्याण ज्यादा अच्छा कहा जाता है।

Baba: God comes and establishes the household path of deities. And when He establishes (the path of household) two kinds of Brahmins are born through Brahma. Among them one kind is of Brahmins who follow the path of renunciation and one kind is of Brahmins who follow the household path. The Brahmins who follow the household path will recognize the Father as well as the Mother. Who is the Father? The Father is Shiv-Shankar Bholenath. Who is the Mother? Brahma is our mother. *Brahm* means senior, *ma* means mother. The most senior mother of the

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

world. What does a mother do? A mother tolerates a lot. Nobody tolerates as much as the mother tolerates in the process of bringing up the children. So till today, nobody has tolerated as much as Brahma tolerated in giving birth and sustaining the Brahmins nor will anybody do so in future. But who is '*Aham beej Prajapita'*, the one who sows the seed in that Brahma? This is something philosophical. It has been said in the Gita: I am the Father who sows the seed. I have sown the seed of knowledge; [it is] the *Vedvani* that emerges from the mouth of Brahma. So, the Supreme Soul came and also sowed the seed of knowledge through Brahma 70 years ago. That institution is indeed functioning in Mt.Abu but the righteous Brahmins among them too are spreading in the world now. Their number is very less just like the five Pandavas. They were just a handful, very few and the rest Kauravas and Yadavas are numerous, they have spread all over [the world]. So this is the situation now. You will understand everything after undergoing the seven days course. Don't spare more time. Just 1-2 hours every day, but following celibacy.
Student: Now it is indeed celibacy [that I practice]. What else…
Baba: Arey, no, no. Even seventy year old people keep producing children. It is not necessary. Your nature is different. In addition, it is said '*turant daan mahakalyan'* (immediate donation is more beneficial) is better.

बाबा- क्या? अच्छे काम के लिए कोई कहे हाँ बहुत अच्छा है, बहुत अच्छा है–2, फिर अच्छा-2 कहके चल प□ा। तो अच्छा नहीं है। अच्छा कब है? जो अच्छा कहा वो काल करे सो आज कर, आज करे सो अब। पता नहीं एक पल में क्या से क्या हो जाये। इसलिए तुरंत दान महाकल्याण□ कहा जाता है।
Baba: What? If someone says, "Yes, it is very good, very nice" for a good job and then he goes away saying very good, very nice, it means that it is not good. When is it good? [It is good when] whatever you have said to be good, you do today whatever you have to do tomorrow and you do now whatever you have to do today[4]. You never no what may happen in one second. That is why it is said *turant daan mahakalyan* (immediate donation is highly beneficial).

समयः 01.01.55-01.06.00
जिज्ञासुः बाबा, माँ जो संतान पैदा करती है बाइ जनरेशन। संतान के लिए पिता-माता सबकुछ करते हैं बाइ जनरेशन। अभी जो बदल रहे हैं, जो हम लोग पेपर में और सामने देख रहे हैं, जो संतान को पालन किया, पोसा सबकुछ किया उसके बाद उसको जो भी देने को था वो भी दे दिया। उसके बाद देख रहे है कि संतान ऑपोजिट हो रही है। क्यों हो गया हमको तो ये समझ में नहीं आता?
बाबाः हम आपको समझाते हैं क्यों हो गया ऑपोजिट । इसलिए ऑपोजिट होता जा रहा है कि ये जो संतान की पैदाईश की परिक्रिया है ये गुप्त होती है। गुप्त होती है लेकिन उस गुप्त में एक बात और है माँ, जैसे अभी बताया ना बच्चा अपनी माँ का परिचय देता है लेकिन बाप का परिचय नहीं देता। तो ऐसे ही माँ कोई व्याभिचारिणी हो जाती है। बस, खून दूसरा आ गया तो वो जो दूसरा खून आया हुआ है। बच्चा तो ये कहेगा कि माँ का बच्चा हूँ और माँ जिसको बाप बतायेगी उसी बच्चा बतायेगा। लेकिन खून तो बदल गया। अब घर-2 में ये हो रहा है। बताया

[4] *kal kare so aaj kar, aaj kare so ab*

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

नहीं जाता ये। अंदर ही अंदर गुप्त ये चल रहा है। खून खराब हो रहे है घर-2 में। किसी को पता नहीं चल रहा है खून खराब हो रहे हैं।

जिज्ञासु- ये तो आप बोला बरोबर। लेकिन हम तो जैसे सुनते हैं.... पूर्व जन्म के ऐसा कोई फल होता है क्या?

बाबा- बिल्कुल-2। कितने जन्मों से, ाई हजार वर्ष की हिस्ट्री मनुष्यों के पास मौजूद है। जब से हिस्ट्री मौजूद है तब से समझो दुख की दुनिया शुरू हुई है। उससे पहले दुख की दुनिया नहीं थी। आदमी दिन कब गिनता है? दुखों में दिन गिनता है या सुख में दिन गिनता है? आप सोच के बताईये। दिन गिनने का काम आदमी सुख के दिनों में करता है या दुख के दिनों में करता है?

जिज्ञासु- दुख के दिनों में।

Student: Baba, a mother gives birth to a child, from generations..... Parents do everything for children from generations. Now the situation is changing, which we read in (news) papers and see in practice. They bring up the children and do everything for them, and after that gave them what they were entitled to. After that we observe that the children turn opposite (i.e. against the parents). Why does it happen, I don't understand?

Baba: I will explain to you why they went against. They are going against because this process of reproduction is hidden. It **is** hidden but there is one more aspect involved in that secret process. For example, it was told just now, wasn't it? ... that a child gives the introduction of his mother but does not give the introduction of the father. Similarly, some mother becomes adulterous. Some 'other' blood has been entered; so the unrelated blood that has entered, the child will say that I am a mother's child and he will declare himself as the child of the one whom the mother introduces as his father. But the blood certainly has changed. Now it is happening in every household. It is not spoken about. It is happening secretly. The blood is getting mixed in every home. Nobody comes to know that the blood is getting mixed.

Student: What you have said is correct. But for example we hear.... is it the result of some previous births?

Baba: Certainly, certainly. For so many births…, the history of two thousand five hundred years is available with the human beings. Ever since the time for which history is available, the world of sorrows has begun. Prior to that the world of sorrow did not exist. When does a man count days? Does he count days in sorrow or in happiness? Think and tell me. Does man count days in happiness or in days of sorrow?

Student: In the days of sorrow.

बाबा- दुख में दिन गिने जाते हैं। तो ये हिस्ट्री दिन गिनने की जो आई है ना ये ाई हजार साल की हिस्ट्री हमारे पास मौजूद है। 1-1 दिन आदमी गिन रहा है। ाई हजार साल हो गया। उसके पहले की हिस्ट्री किसी के पास है ही नहीं। कोई प्रूफ ही नहीं मिल रहा है। वो सुख की सृष्टि थी। ाई हजार साल पहले सतयुग और त्रेता था। अभी द्वापुर, द्वैतवादी सृष्टि बन गई है। माँ और बाप दोनों मिलकर के एक नहीं रह पाते हैं। माँ और बाप दोनों मिलकर के एक हो जायें माना विष्णु का राज्य हो गया। स्त्री और पुरूष दो हाथवाले होते हैं ना। दोंनो मिलकर चार हाथ बन जाते हैं। चारों हाथ का जो राज्य है वही वास्तव में विष्णु का राज्य है। वो विष्णु का राज्य देवताओं का राज्य था सतयुग-त्रेता में, राम-कृष्ण की दुनिया में। आज वो राज्य नहीं है। आज

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

राक्षसों का राज्य है, द्वैतवादी राज्य है। द्वैतवादी राज्य में द्वैत से पैदा होते हैं दैत्य। अद्वैतवादि राज्य होता है जहाँ, दूसरा नहीं होता है, माँ-बाप दोंनो मिलकर के एक होकर के काम करते हैं, वो है देवताओं का राज्य। भगवान अब आकर के ये द्वैतवादी राज्य को खत्म कर के अद्वैत देवताओं का राज्य स्थापन करनेवाला है।

जिज्ञासु- त्रेतायुग तक सब ठीक था।

बाबा- सब ठीक था।

जिज्ञासु- लेकिन द्वापर तक.....

बाबा- द्वापर का मतलब ही है दो। द्वैत कर दिया।

जिज्ञासु- द्वापर से सब उलट-पलट हो गया।

बाबा- आप अपने आप ही ज्ञान बोलना शुरू कर दिया। ज्ञान माना सच्चाई, जानकारी। किस बात की जानकारी? सच्चाई की जानकारी।

Baba: Days are counted in times of sorrow. So, this history of counting days that is available, the history of two thousand five hundred years is available with us. Man is counting each day. Two thousand five hundred years have passed. Nobody has the history of the preceding period. No proof is being found (for that period). That was a world of happiness. There was the Golden Age and the Silver Age two thousand five hundred years ago. Now it has become *Dwapur* (Copper Age), a dualistic world (*dwaitwadi srishti*). Mother and father cannot unite and stay together. If mother and father become one, then it means that it is a kingdom of Vishnu. Women and men have two hands, don't they? Both together constitute four arms. The rule of the four arms is in reality the kingdom of Vishnu. There was a kingdom of Vishnu, kingdom of deities in the Golden Age and the Silver Age, in the world of Ram and Krishna. Today that kingdom does not exist. Today it is a kingdom of demons. It is a dualistic world. In the dualistic kingdom, demons are born through dualism. And where there is a non dualistic kingdom there is no second person; the mother and the father unite and work together, that is a kingdom of deities. Now God comes and ends the dualistic kingdom and is going to establish the non-dualistic kingdom of deities.

Student: Everything was ok till the silver Age.

Baba: Everything was ok.

Student: But until the Copper Age…

Baba: *Dwapar* (Copper Age) itself means two. It was divided into two.

Student: Everything went awry from the Copper Age.

Baba: You have started to speak knowledge on your own. Knowledge means truth, information. Information of what? Information of truth.

……

Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info